Q2. मानव के क्रिया-कलाप पर मरुस्थलिय वातावरण के प्रभावों का वर्णन करें।

→ प्राकृतिक वातावरण का सबसे महत्वपूर्ण तत्व जलवायु है। जिसका प्रभाव स्थिति और चरित्र के अनुरूप अलग-अलग प्राकृतिक प्रदेशों में निवास करने वाले लोगों के क्रिया-कलापों पर पड़ता है। मानव जीवन के सभी पहलुओं पर ही वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ में कुमारी सैम्पल का कहना है कि, "man is a product of Nature. She has entered into his bones and tissues into his mind and soul." किन्तु इसके विपरित जार्ज थॉम ने लिखा है कि "Tough environment undoubtedly influences man, man in turn changes his environment"। इस प्रकार मानव अपनी आवश्यकता के अनुसार वातावरण को अंशतः परिवर्तित भी करता है।

मानव के क्रियाकलापों पर वातावरण
विभिन्न मरुस्थलिय

Scanned with CamScanner

के प्रभाव का वर्णन निम्नलिखित है —

(i) कृषि पर प्रभाव :- मानवीय क्रियाकलापों में कृषि सर्वाधिक मौलिक एवं प्राचिन है। आज भी कृषि अर्थव्यवस्था की आधार स्तंभ मानी जाती है। बहुत से उद्योग भी कच्चे माल की प्राप्ती हेतु कृषि पर आधृत है। वर्षा एवं आर्द्रता की कमी के कारण इस जलवायु में कृषि कार्य असंभव सा प्रतित होता है। रेतिली मिट्टी में नमी बनाए रखने की क्षमता नहीं होती है फलतः कृषि कार्य मुमकिन नहीं हो पाता है। केवल मरुद्यानों के निकट ही कुछ शुष्क फसलें जैसे - मक्का, ज्वार - बाजरा, कपास तंबाकू इत्यादि उगाई जा पाती हैं। इन सबके अलाव खजूर इस वातावरण में बहुतायत से उगाया जा पाता है। जिन भागों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है वहां फल, सब्जी एवं कई अन्य फसलें भी उगाई जाती हैं।

(ii) पशुपालन पर प्रभाव :- वनस्पति एवं चारे के अभाव के कारण पशुपालन भी दुष्कर कार्य होता है। कंटिली - झाड़ियों व छोटे पौधों को खा के भी जिवित रह पाने वाले कुछ पशु ही यहां पाले जाते हैं जैसे - ऊँट, बकरी, भेड़, कुछ गायें आदि। ऊँट सर्वाधिक महत्वपूर्ण पशु है जो दूध, मांस, सवारी व भार वहन अनेक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पाला जाता है। अपनी अद्वितिय क्षमताओं के कारण ही ऊँट ने "मरुस्थल के जहाज" की संज्ञा पाई है।

(iii) उद्योग धंधो पर प्रभाव :- प्रायः मरुस्थलों में खनिज पाए जाते अतः इन क्षेत्रों में कई जगहों पर उद्योगों का विकास हुआ है। इस विषम जलवायु में भी ऊँची - ऊँची इमारतों के वातानुकूलित कमरों में बड़े - बड़े औद्यो-गिक निर्णय लिए जाते हैं लोग आधुनिक सुख सुविधाओं

Scanned with CamScanner

का उपयोग करते हैं जैसे - सउदी अरब, ईरान, इराक आदि देशों में। जहाँ खनिजों का अभाव होता है वहाँ उद्योगों की स्थापना अपेक्षाकृत कठिन ही जान पड़ती है। पशुपालन आधृत कुछ उद्योग जैसे ऊँट के ऊन से कालिन, दरी व कंबल आदि बनाना, चमड़ा उद्योग आदि छोटे पैमाने पर विकसित हो पाते हैं। लेकिन साधारणतः ऐसी जलवायु में उद्योगों का अभाव ही रहता है।

(iv) परिवहन पर प्रभाव :- यहाँ परिवहन के साधनों का प्रायः अभाव ही होता है। सर्वत्र बालू मिलने के कारण रेल, सड़क तथा वायुयान अड्डों का निर्माण अत्यंत दुष्कर हो जाता है। परिवहन साधनों के अभाव के कारण ही कई खनिज सम्पदा सम्पन्न क्षेत्र भी अविकसित रह गए हैं। मरुस्थलीय वातावरण वाले क्षेत्रों में यातायात का सर्वप्रमुख साधन ऊँट होता है। यह सवारी करने एवं सामान ढोने दोनों कामों में आता है। यह पानी पीए भी सैकड़ों किलोमीटर लम्बी यात्रा कर सकता है। अपने इन्हीं गुणों के कारण यह मरुस्थल का अद्वितीय जानवर है और इसी कारण इसने 'मरु-स्थल के जहाज (ship of desert) की संज्ञा पाई है। कुछ स्थानों पर रेलवे सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होती है जैसे - नील नदी घाटी आदि में परिवहन के अत्याधुनिक साधन उपलब्ध हुए हैं।

(v) वस्त्र एवं आवास पर प्रभाव :- अत्यधिक गर्मी पड़ने के कारण यहाँ के लोग ढीले-ढाले वस्त्र पहनते हैं। प्रतिदिन रात में व जाड़े में कड़ाके की सर्दी पड़ती है अतः लोग ऊनी वस्त्रों का भी प्रयोग करते हैं। ईरान, इराक व सउदी अरब की कालिने विश्व प्रसिद्ध हैं।

Scanned with CamScanner

यहाँ के लोग घरों को ठंडा रखने के लिए मोटे पत्थरों की दिवारें बनाते हैं तथा घरों की छत चपटी (Flat) होती है क्योंकि वर्षा का अभाव होता है। इस वातावरण के घुमक्कड़ लोग तम्बुओं में रहा करते हैं। तम्बुओं को भी ये लोग साथ-साथ लिए फिरते हैं।

(iii) जनसंख्या पर प्रभाव :- मरुस्थलिय जलवायु में वर्षा की कमी, अत्याधिक गर्मी तथा शुष्क जलवायु के कारण लोग रहना नहीं चाहते फलतः बहुत कम जनसंख्या पाई जाती है। मरुस्थलिय भूमि के कारण कृषि कार्य असंभव होते हैं। अतः मानव निवास हेतु यह क्षेत्र पूर्णतः अनुपयुक्त होता है। मरुद्यानों के निकट लोगों की बस्तियाँ स्थित रहती हैं इसके अलावे खनिज प्राप्य क्षेत्रों में भी जनसंख्या का बसाव होता है।

(iii) मानव तथा मरुस्थल :- मरुस्थलिय प्रदेश में वातावरण के अनुसार कई प्रकार के लोग रहते हैं। जिनका परिचय निम्नलिखित है—

(a) आदिवासी शिकारी — जैसे बुशमैन आदि

(b) खानाबदोश लोग — जैसे बद्दू, तर्क, भारतीय बंजारे आदि। ये लोग Nomads (चलवासी) का जीवन जिते हैं और अपने तंबू, पशु व सामान साथ लिए चलते हैं।

(c) कृषक वर्ग — ये मरुद्यानों व सिंचित भागों में स्थाई रूप से निवास कर कृषि कार्य करते हैं।

(d) कारवाँ — ये व्यापारी वर्ग के लोग होते हैं जो ऊँटों के काफिले के साथ चलते हैं।

(e) प्रवासी — इस वर्ग में बाहर से आए वे लोग होते हैं जो खनिज क्षेत्रों के निकट अस्थाई रूप से बस जाते हैं। तथा उच्च स्तर का जीवन व्यतित करते हैं।

Scanned with CamScanner

(iii) दर्शन पर प्रभाव :- मरुस्थलिय वातावरण में दिन के समय गर्मी के कारण लोग कम ही बाहर निकलते हैं परन्तु रात यहाँ साफ होती है। दिशा का ज्ञान रखने हेतु भी ये लोग नक्षत्रों की मदद लेते हैं फलतः इस वातावरण में ज्योतिष व नक्षत्र विज्ञान का बहुत विकास हुआ है। जैसे हम 'अरब' का उदाहरण ले सकते हैं।

निष्कर्ष :- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि आर्थिक विकास की दृष्टि से मरुस्थलिय जलवायु वाले प्रदेश आज भी बहुत पिछड़े हुए हैं। यहाँ की विषम जलवायु जनसंख्या को आकर्षित करने में पूर्णतः अक्षम है। आधुनिक सभ्यता की मदद से बेखबर खानाबदोस जनजातियाँ ही यहाँ की मूल निवासी हैं। इस वातावरण के लोग सामान्यतः निर्भिक और शक्तिशाली लेकिन हिंसक व लुटेरे प्रवृत्ति के होते हैं।

Scanned with CamScanner